○ 30 / 04 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗ट्रस्टी बन सब चिंताओं से मुक्त रहे ?∗

➢➢ ∗बाप का मददगार बन पूजनीय बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗हर सेकंड, हर खजाने को सफल कर सफलता की ख़ुशी अनुभव की ?∗

➢➢ ∗संकल्पों में भी किसी आकर्षण ने आकर्षित तो नहीं किया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अब अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी की पोजीशन में स्थित रहो। ∗हद की पोजीशन कि मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबुल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवैन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ. इस प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उल्टे पोजीशन को छोड़ अब त्यागी और तपस्वीमूर्त बनो।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं निर्विघ्न विजयी रतन हूँ"*

〰✧ अपने को सदा निर्विग्न, विजयी रतन समझते हो? विघ्न आना, यह तो अच्छी बात है लेकिन विघ्न हार न खिलायें। *विघ्नों का आना अर्थात् सदा के लिए मजबूत बनाना। विघ्न को भी एक मनोरंजन का खेल समझ पार करना- इसको कहते हैं 'निर्विग्न विजयी'।* तो विघ्नों से घबराते तो नहीं? जब बाप का साथ है तो घबराने की कोई बात ही नहीं। अकेला कोई होता है तो घबराता है। लेकिन अगर कोई साथ होता है तो घबराते नहीं, बहादूर बन जाते हैं। तो जहां बाप का साथ है, वहाँ विघ्न घबरायेगा या आप घबरायेंगे? सर्वशक्तिवान के आगे विघ्न क्या है? कुछ भी नहीं।

〰✧ इसलिए विघ्न खेल लगता, मुश्किल नहीं लगता। विघ्न अनुभवी और शक्तिशाली बना देता है। *जो सदा बाप की याद और सेवा में लगे हुए हैं, बिजी हैं,वह निर्विग्न रहते हैं। अगर बुद्धि बिजी नहीं रहती तो विघ्न वा माया आती है। अगर बिजी रही तो माया भी किनारा कर लेगी। आयेगी नहीं, चली जायेगी।* माया भी जानती है कि यह मेरा साथी नहीं है, अभी परमात्मा का साथी है। तो किनारा कर लेगी। अनगिनत बार बिजयी बने हो, इसलिए विजय प्राप्त करना बड़ी बात नहीं है। जो काम अनेक बार किया हुआ होता है, वह सहज लगता है। तो अनेक बार के बिजयी। सदा राजी रहने वाले हो ना? मातायें सदा खुश रहती हो? कभी रोती तो नहीं? कभी कोई परिस्थिति ऐसी आ जाये तो रोयेंगी? बहादुर हो। पाण्डव मन में तो नहीं रोते? यह 'क्यों हुआ'. 'क्या हुआ'-ऐसा रोना तो नहीं

रोते?

〰✧ *बाप का बनकर भी अगर सदा खुश नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे? बाप का बनना माना सदा खुशी में रहना। न दु:ख है, न दु:ख में रोयेंगे। सब दु:ख दूर हो गये। तो अपने इस वरदान को सदा याद रखना।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आवाज़ से परे रहना अच्छा लगता है वा आवाज़ में रहना अच्छा लगता है? असली देश वा असली स्वरूप में आवाज़ है? *जब अपनी असली स्थिति में स्थित हो जाते हो आवाज़ से परे स्थिति अच्छी लगती है ना।* ऐसी प्रैक्टीस हरेक कर रहे हो? जब चाहे जैसे चाहे वैसे ही स्वरूप स्थित हो जायें।

〰✧ जैसे योद्धे जो युद्ध के मैदान में रहते हैं उन्हों को भी जब भी और जैसा जैसा आर्डर मिलता है वैसे करते ही जाते हैं। ऐसे ही रूहानी वारियर्स को भी जब और जैसा डायरक्शन मिले वेसे ही अपनी स्थिति को स्थित कर सकते हैं, क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल भी हो और मास्टर सर्वशक्तिवान भी हो। तो दोनों ही होने कारण एक सेकण्ड से भी कम समय में जैसी स्थिति में स्थित होना चाहे उस स्थिति में टिक जायें. ऐसे रूहानी वारियार्स हो? अभी - अभी कहा जाये

परमधाम निवासी बन जाओ तो ऐसी प्रैक्टीस है जो कहते ही इस देह, देह के देश भूल अशरीरी परमधाम निवासी बन जाओ?

〰✧ *अभी - अभी परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, अभी - अभी सेवा के प्रति आवाज़ में आये, सेवा करते हुए भी अपने स्वरूप की स्मृति रहे, ऐसे अभ्यास बने हो?* ऐसा अभ्यास हुआ है? वा जब परमधाम निवासी बनने चाहो तो परमधाम निवासी के बजाय बार - बार आवाज़ में आ जायें ऐसा अभ्यास तो नहीं करते हो? अपनी बुद्धी को जहाँ चाहो वहाँ एक सेकण्ड से भी कम समय में लगा सकते हो? ऐसा अभ्यास हुआ है।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सेना के महारथी किसको कहा जाता है। उनके लक्षण क्या होते हैं। *महारथी अर्थात् इस रथ पर सवार, अपने को रथी समझे।* मुख्य बात कि अपने को रथी समझ कर इस रथ को चलाने वाले अपने को अनुभव करते हो? *अगर युद्ध के मैदान में कोई महारथी अपने रथ अर्थात् सवारी के वश हो जाए तो क्या वह महारथी, विजयी बन सकता है या और ही अपनी सेना के विजयी-रूप बनने की बजाये विघ्न-रूप बन जायेगा। हलचल मचाने के निमित्त बन जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- माया से कभी हार नहीं खाना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मधुबन की ऊंची पहाड़ी पर बैठी खुले आसमान को देख रही हूँ... ठंडी ठंडी हवाएं मुझे छूकर बहती जा रही हैं... इन हवाओं में आज भी बाबा की साकार भासना आती है जो मुझे मंत्र मुग्ध कर रही है...* बाबा की यादों में मगन मैं आत्मा पहुंच जाती हूँ परमधाम यहाँ चारों और प्रकाश ही प्रकाश है... *शिव बाबा से प्रवाहित होती अनन्त किरणें मुझ आत्मा में समाती जा रही हैं...* सर्व शक्तियों से भरपूर हो अब मैं आत्मा स्वयं को वतन में अनुभव कर रही हूँ यहाँ बाप दादा बाहें फैलाये मेरा इंतज़ार कर रहे हैं... बाबा मुस्कुराते हुए बोले आओ मेरी लाडली बच्ची...

❉ *बाबा मुझे अपनी गोद बिठाकर मुझ आत्मा से बोले:-* "फूल बच्ची... *शिवपुरी और विष्णुपुरी में अपना बुद्धि योग लगाओ अब तुम्हें वापस अपने घर चलना है...* बाप तुम आत्माओं को साथ ले जाने आये हैं निर्विकारी दुनिया का मालिक बनाने... *बाप की श्रीमत को पूरा पूरा फॉलो कर तुम्हें बाप से पूरा वर्सा लेना है...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ईश्वरीय गोद में बैठी अपने सौभाग्य पर आनंदित होती हुई बाबा से कहती हूँ:-" हाँ मेरे जीवन दाता मेरे प्राण प्यारे बाबा... मैं

आत्मा ईश्वरीय गोद पाकर धन्य हो गयी हूँ... आपकी श्रीमत पाकर मैं कोड़ी से हीरे तुल्य बनती जा रही हूं... *आपने मुझ आत्मा की बुद्धि का ताला खोलकर मुझे गुणों का भंडार बना दिया है... आप मिले और मेरा जीवन ही बदल गया, अपने इस दुर्लभ जीवन को देखकर मैं आत्मा असीम आनंद का अनुभव कर रही हूँ...*

❇ *बाबा मेरी और बहुत प्यार भरी दृष्टि से देखकर बोले:-* "मेरी फूल बच्ची... बाप ने तुम्हें नया जीवन दिया है इस ब्राह्मण जीवन को कभी नहीं भूलना... सतगुरु का निंदक नहीं बनना... बाप की श्रीमत पर चलकर बाप का नाम बाला करना है... *माया से हार नही खानी है, शिवपुरी और वैकुण्ठ की याद में रह अपनी स्थिति ऊंच बना ऊंच ते ऊंच पद पाने का पूरा पुरुषार्थ करना है... इसी से तुम सुखधाम के मालिक बन जाएंगे...*

➳ _ ➳ *बाबा की मधुर वाणी को अपने हृदय में धारण करती मैं आत्मा मीठे बाबा से कहती हूँ:-* " मेरी जीवन नैया को पार लगाने वाले मेरे दिलाराम बाबा... आपने मेरी झोली सुखों से भर दी है... अब इस दुनिया से कुछ भी पाने की इच्छा शेष नहीं रह गयी है... *जो पाना था वो पा लिया अब और बाकी क्या रहा... *जिस परमात्मा को समस्त जगत के प्राणी ढूंढ रहे हैं वो ईश्वर मेरा पिता है इस स्मृति से मन गद गद हो जाता है... अब भला मुझे और क्या चाहिये... इस दुनिया का रचयिता मेरा पिता मुझे मिल गया है यही बात सदैव मुझे आनंदित और मन्त्र मुग्ध करती है...*

❇ *बाबा मेरी बातों को सुनकर मुस्कुराते हुए मुझसे बोले:-* " मेरी सिकीलधी बच्ची... *बाप के बनकर तुम वर्से के अधिकारी बन गए हो परंतु तीव्र पुरुषार्थ ही तुम्हें पहले नम्बर में लाएगा इसलिए बुद्धि में सदैव शिवपुरी और वैकुंठ की याद समाई रहे... बाप तुम्हें मत देते हैं नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी बनने की...* देहभान को भूल बस एक बाप को और वर्से को याद करो, व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करो... *संगमयुग का एक एक पल लाखों वर्षों के समान है इसे गंवाना माना अपने भाग्य पर लकीर लगाना... इसलिये अब बाप को याद कर अपने विकर्मों को स्वाहा करो और बाप से 21 जन्मों का वर्सा पाओ...*

➳ ➳ *बाबा की प्यार भरी समझानी को स्वयं में आत्मसात करती मैं आत्मा बाबा से बोली:-* " हाँ मेरे प्यारे बाबा... *आपने इन ज्ञान रत्नों से मेरा श्रृंगार कर मुझे अत्यन्त सुंदर बना दिया है... इस नरक जैसी जीवन से निकाल एक नया जीवन दिया है, और मुझ आत्मा को आप समान पवित्र बना दिया है...* परम पवित्र बाप की बनकर मैं आत्मा अलौकिक शक्ति से भर गई हूँ... आपके महावाक्यों को धारण कर मैं आत्मा योग अग्नि में तपकर निर्विकारी बन गयी हूँ... *मुझे मेरे पिता परमात्मा से कितना अलौकिक जीवन मिला है ये स्मृति आते ही मेरा हृदय खुशी के गीत गाने लगता है , मेरे प्राण प्यारे बाबा आपका कितना भी आभार व्यक्त करूँ कम ही लगता है... मैं आत्मा बाबा को हृदय की गहराइयों से शुक्रिया कर अपने साकारी तन में पुनः लौट आती हूँ...*

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मनुष्यों के डूबे हुए बेड़े को सेल्वेशन आर्मी बन पार करना है*"

➳ _ ➳ 5 विकारों रूपी माया रावण की जेल में कैद सभी आत्मा रूपी सीताओं को इस जेल से छुड़ाये, उन्हें सेल्वेज करने के लिए स्वयं जगत के नियन्ता प्रभु राम अर्थात *परम पिता परमात्मा शिव बाबा ने आकर जो ईश्वरीय सेल्वेशन आर्मी बनाई है, उस ईश्वरीय सेल्वेशन आर्मी का प्रमुख सैनिक और अपने प्रभु राम का सच्चा - सच्चा खुदाई खिदमतगार बन सभी आत्मा रूपी सीताओं को रावण की कैद से छुड़ाना और सबको माया से लिबरेट करना हर ब्राह्मण बच्चे का मुख्य कर्तव्य है*।

➳ _ ➳ इस बात को स्मृति में लाकर अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप को धारण कर, सच्चा - सच्चा खुदाई खिदमतगार बन सबको माया से लिबरेट करने के, अपने खुदा बाप के फरमान का पालन करने के लिए मैं उड़ चलता हूँ ऊपर की ओर। *सारे विश्व मे भ्रमण करते हए मैं देख रहा हँ विश्व की सर्व

आत्माओं को जो विकारों की अग्नि में जल रही हैं। माया रावण के चंगुल से छूटने का भरसक प्रयास कर रही हैं किन्तु सामर्थ्य ना होने के कारण उसके आकर्षक जाल में और ही फँस कर दुर्गति को पाती जा रही हैं*।

➳ _ ➳ अपने इन सभी आत्मा भाइयों को माया से लिबरेट करने के लिये अब मैं अपने प्यारे बापदादा का आह्वान करती हूँ। *बापदादा के साथ कम्बाइंड हो कर, विश्व ग्लोब पर बैठ, बापदादा से सर्वशक्तियाँ ले कर अब मैं विश्व की सर्व आत्माओं में प्रवाहित कर रही हूँ*। 5 विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में जल रही आत्माओं पर ये शक्तियां शीतल फुहारों के रूप में बरस कर विकारों की अग्नि को शांत कर, उन्हें शीतलता का अनुभव करवा रही है। *शीतलता की यह अनुभूति उन्हें सुकून दे रही हैं। सर्व आत्माओं को परमात्म सन्देश और परमात्म परिचय मिल रहा है*।

➳ _ ➳ सच्चा सच्चा खुदाई ख़िदमतगार बन विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्म परिचय दे कर, उन्हें माया से लिबरेट होने का सहज रास्ता बता कर, अब मैं स्वयं को परमात्म बल से भरपूर करने के लिए अपने निराकारी स्वरूप में स्थित होकर अपनी निराकारी दुनिया की ओर चल पड़ती हूँ। *विश्व ग्लोब से ऊपर, सूक्ष्म वतन को पार कर मैं पहुंच जाती हूँ निराकारी आत्माओं की दुनिया परमधाम में। परमधाम में अपने मीठे प्यारे शिव बाबा के सानिध्य में बैठ अब मैं स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे बाबा अपनी सारी शक्तियाँ मुझ आत्मा में भरकर अपनी समस्त पावर मेरे अंदर समाहित कर रहे हैं ताकि *संपूर्ण ऊर्जावान बन मैं विश्व की सर्व आत्माओं को, जो 5 विकारों रूपी माया रावण की जेल में फंस कर दुखी हो रही हैं और उसकी कैद से छूटने के लिए छटपटा रही हैं, उन सबको माया से लिबरेट कर, परमात्म शक्तियों से उन्हें बलशाली बना कर विकारों से मुक्त होने का बल उनमें भर सकूँ*।

➳ _ ➳ परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, सम्पूर्ण ऊर्जावान बन अब मैं परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और साकारी दुनिया मे आकर अपने साकारी तन में प्रवेश कर, अपने ब्राह्मण स्वरूप को धारण कर लेती हूँ। *अपने

ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होकर सच्चा - सच्चा खुदाई ख़िदमतगार बन, अपने शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति से, सबको माया से लिबरेट करने की ऑन गॉडली सर्विस पर अब मैं सदैव तत्पर रहती हूँ*। सेल्वेशन आर्मी बन सबको विकारों की दुबन से निकाल उन्हें सेल्वेज करने का रूहानी धन्धा अब मैं हर समय कर रही हूँ।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं हर सेकण्ड, हर खजाने को सफल कर सफलता की खुशी अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा संकल्प में भी कोई आकर्षण के आकर्षित करने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सम्पूर्णता की समीपता को अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं बंधनमुक्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सेवा बहुत अच्छी करो लेकिन सेवा और स्व दोनों कम्बाइण्ड हों... *जैसे बापदादा कम्बाइण्ड है ना... आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है ना! ऐसे स्व स्थिति और सेवा दोनों कम्बाइण्ड... परसेन्टेज में कोई कमी नहीं हो...* कभी सेवा की परसेन्टेज ज्यादा, कभी स्व की परसेन्टेज ज्यादा, नहीं, सदा बैलेन्स... तो आपके बैलेन्स द्वारा विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग मिलती रहेगी... *तो अभी विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग चाहिए। मेहनत नहीं चाहिए, ब्लैसिंग चाहिए... तो आपका बैलेन्स स्वतः ही ब्लैसिंग दिलायेगी...* अच्छा।

✺ *ड्रिल :- "सदा स्व-स्थिति और सेवा का बैलेन्स रखना"*

➳ _ ➳ मेरा यह ब्राह्मण जीवन मेरे शिव पिता परमात्मा की देन है जिसका रिटर्न मुझे बाबा का मददगार बन कर अवश्य देना है... *मन ही मन स्वयं से यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर, अपने मन बुद्धि की लाइन को क्लीयर कर, मैं जैसे ही बाबा के साथ जोड़ती हूँ वैसे ही मेरी मन बुद्धि बाबा के संकल्पो को कैच करने लगती है...* मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ कि बाबा मुझे स्व स्थिति और सेवा का बैलेन्स रख कर चलने की सलाह दे रहे हैं... बाबा मुझ से कह रहे हैं, मेरे विश्व परिवर्तक बच्चे:- "सदा याद रखो कि स्व स्थिति और सेवा का बैलेन्स ही स्व परिवर्तन सो विश्व परिवर्तन का आधार है"...

➳ _ ➳ बाबा के संकल्पो को कैच कर, स्व स्थिति और सेवा का बैलेंस सदा बना कर रखने की प्रतिज्ञा बाबा से करती हुई अब मैं बाबा की याद में अशरीरी हो कर बैठ जाती हूँ... *अशरीरी स्थिति में स्थित होते ही मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे बाबा मुझे अपने पास बुला रहे हैं...* ऐसा लग रहा है जैसे कोई शक्ति तीव्र गति से मुझे ऊपर की ओर खींच रही है... बहुत तेज प्रकाश की एक लाइट परमधाम से सीधी मुझ आत्मा पर पड़ रही है जो मुझे परमधाम तक पहंचने का रास्ता दिखा रही है...

➳ _ ➳ सूर्य के प्रकाश से भी अधिक शक्तिशाली यह लाइट मुझे मेरे वास्तविक स्वभाव, संस्कार की अनुभूति कराने के लिए उस ज्योति के देश में खींच रही है... *फरिश्तों की दुनिया को पार करते हुए मैं जा रही हूँ उस ज्योति के देश मे जहां मेरे शिव पिता परमात्मा अपनी किरणों रूपी बाहों को फैलाये मेरे स्वागत के लिए खड़े हैं...* उनकी किरणों रूपी बाहों में समाकर अब मैं उनके बिल्कुल समीप पहुंच गई हूँ... बस मैं और मेरा बाबा...

➳ _ ➳ बाबा से आ रही सर्वशक्तियों के प्रकाश की एक - एक किरण मुझ आत्मा के अनेक जन्मों के नकारात्मक स्वभाव संस्कार को धोकर मुझे शुद्ध बना रही है... शक्तियों का औरा मुझ आत्मा के चारो और बढ़ रहा है... मेरी सारी कमी कमजोरियाँ जल कर भस्म हो रही हैं... *मेरे अंदर शक्तियों का संचार हो रहा है जो मुझमे असीम बल भरकर मुझे शक्तिशाली बना रहा है... मैं बेदाग हीरा बन रही हूँ...* स्वयं में सर्वशक्तियों को भरकर, शक्तिसम्पन्न स्वरूप बन कर अब मैं वापिस लौट रही हूँ और अपने साकारी तन में आकर विराजमान हो जाती हूँ...

➳ _ ➳ "बैलेन्स ही ब्लैसिंग का आधार है" इस बात को स्मृति में रख, अपने मन बुद्धि की तार को हर समय अपने पिता परमात्मा के साथ जोड़, कर्मयोगी बन अब मैं हर कर्म कर रही हूँ... *बाबा ने मुझे निमित बना कर इस धरा पर सेवा अर्थ भेजा है, यह स्मृति मुझे सदैव इस बात का अहसास दिलाती है कि मैं तो केवल निमित हूँ, करनकरावनहार बाबा मुझसे यह सेवा करवाकर मेरा सर्वश्रेष्ठ भाग्य बना रहे हैं और इस निमितपन की स्मृति में रह, करनकरावनहार बाबा की याद में रह हर कर्म करने से स्वत: ही मुझसे शक्तिशाली वायब्रेशन फैलते रहते हैं...* जिससे स्व स्थिति और सेवा का बैलेंस सहज ही बना रहता है...

➳ _ ➳ बाबा की याद से अब मैं अपने हर संकल्प, बोल और कर्म को ऐसा श्रेष्ठ बना रही हूँ जो मेरा हर संकल्प, बोल और कर्म सहज ही औरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन रहा है... *परमात्म याद में रहने से मनसा, वाचा, कर्मणा तीनो रूपो से शक्तिशाली बन सेवा के क्षेत्र में मैं सहज ही सफलता प्राप्त कर

रही हूँ...* सेवा और स्व स्थिति का बैलेंस मुझे स्वयं के साथ - साथ सर्व का कल्याणकारी बनाकर सर्व की, और परमात्म दुआओं की अधिकारी आत्मा बना रहा है...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔